4) विट्रेक्टॉमी ऑपरेशन -

आँख में रक्त ज्यादा होने पर अथवा रेटिना (दृष्टि पटल) पर गंभीर खतरा होने पर विट्रेक्टॉमी ऑपरेशन एवं इसके साथ जुड़े हुए अन्यविधियों द्वारा उपचार किया जाता है । ध्यान रहे -

इन सब उपचारों के साथ डायबिटीज का नियंत्रण सुबह चलना, प्रणायाम भी अत्यन्त आवश्यक है ऐसा ना करने पर पुनः नजर कम हो सकती है तथा इलाज लग सकता है ।

विट्रेक्टॉमी ऑपरेशन

9. लेजर उपचार विधि क्या है ?

लेजर एक प्रकार की केन्द्रित प्रकाश की किरण है । सही समय पर लेजर डायबिटीक रेटनोपैथी के अधिकांश गंभीर समस्याओं से बचा सकता है । लेजर द्वारा किये हुए उपचार में मरीज को भर्ती करने की आवश्यकता नहीं है । लेजर से पहले या बाद में कई परहेज नहीं है । इस विधि में सर्वप्रथम मरीज की आंखों में पुतली फैलाने वाला (Dilating) ड्राप डाला जाता है ।

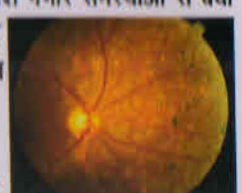

पर्दे पर लेजर का निशान

उपचार के कुछ घंटे पश्चात आप अपनी आँखों को पुनः उपयोग मे ला सकते हैं । यह एक पूरी तरह दर्द रहित प्रक्रिया है ।

10. लेजर सर्जरी से होने वाले दुष्परिणाम (Side effects)

लेजर से होने वाले फायदें की तुलना में (Side effects) दुष्परिणाम बहुत कम है । तथा ज्यादातर मरीजों को रोजमर्रा में कार्य में असुविधा नहीं होती है । कुछ दुष्परिणाम है -1) आंखों के चारो ओर की दृष्टि व संकुचित होना ।

2) रंगों को पहचानने में परेशानी होना ।

3) रात में कम दिखाई देना ।

11. डायबिटीक रेटिनोपैथी का ऑपरेशन कैसे होता है -

ऐसे मरीज जिसमे डायबिटीक रेटिनोपैथी अंतिम अवस्था में होने के कारण लेजर द्वारा उपचार संभव न हो नेत्र विशेषज्ञ आपरेशन कराने की सलाह देते हैं । जिसे विटरेक्टॉमी ऑपरेशन कहते हैं । इस विधि में रेटिना के अंदर के रक्त युक्त द्रव्य को बदल दिया जाता है । जिससे रेटिना स्वच्छ हो सकती है । कुछ मरीजों में इससे दृष्टि बेहतर हो सकती है ।

12. क्या नियमित जांच करवाने पर नेत्र परीक्षण से डायबिटीक रेटिनोपैथी का इलाज संभव है ?

समय सम पर नेत्र परीक्षण करवाने से डायबिटीक रेटिनोपैथी के लक्षणों की डॉक्टर द्वारा जल्दी पहचान संभव है । जिससे इसके दुष्प्रभाव जैसे नजर का कम होना आदि से बचा जा सकता है । जितनी शुरूवाती स्तर पर बिमारी का पता चलेगा उतना अच्छा इलाज संभव होगा ।

रेटिना जांच

13. लेजर ऑपरेशन के पश्चात क्या मैं अपनी दृष्टि को पुनः प्राप्त कर सकता हूँ ?

लेजर सर्जरी का मुख्य उद्देश्य दृष्टि दोषों को दूर करने तथा दृष्टि क्षय होने से रोकना है । इससे दृष्टि को पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता है । परन्तु दृष्टि को और अधिक क्षय होने से बचाया जा सकता है ।

14. मेरा आंखों के चश्में का नम्बर बार-बार बदलता है, क्या इसका डायबिटीज से कोई संबंध हो सकता है ?

हां मधुमेह के रोगियो मे खून में शर्करा की मात्रा घटते बढ़ते रहने की वजह से आपके चश्में का नंबर भी बदल सकता है । मोतियाबिंद भी डायबिटीज के मरीजों में जल्दी होता है । चश्मे के नम्बर की सही जांच के पहले डायबिटीज नियंत्रण आवश्यक है । याद रखिए डायबिटीक रेटिनो पैथी आंख की अपनी बीमारी नहीं है यह शरीर में डायबीटीज होने का आँखों पर असर है । अतः निम्न जांच समय समय पर डाक्टर की सलाह के अनुसार जरूर कराएँ - 1. किडनी की जांच

2.हृदय की जांच

3.संबंधित रक्त जांच (Cholestrol)

डायबिटीज

आपकी

दृष्टि छीन सकती है।

साईं बाबा नेत्र चिकित्सालय

महावीर मेडिकल स्टोर्स के बाजू, फाफाडीह, छोटी लाईन के पास, रायपुर (छ.ग.)

फोन : 0771-4037979, 4025063 टोल फ्री : 1800-3000-5299

www.facebook.com/saibabaeyehospital

www.twitter.com/eyesaibaba

www.saibabahospital.com

आंखों की सभी प्रकार की बीमारियों का अत्याधुनिक मशीनों द्वारा ऑपरेशन एवं लेजर की सुविधा ।

1. मधुमेह का आंखो पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

- मोतिया बिंद का खतरा बढ जाता है ।

हमारी आँख

- नजर कमजोर होना, बार-बार संक्रमण (Infection) काला मोतिया बिंद होना आंखो की मांसपेशियों का अनिश्चित कालीन लकवा होना जिसके कारण नजर का दोहरा होना ।

- मधुमेह में आंखो पर सबसे बुरा प्रभाव दृष्टि पटल, या आंख के पर्दे (Retina) पर पड़ता है जिसे डायबिटीक रेटिनोपैथी कहते हैं

2. डायबिटीक रेटिनोपैथी क्या है ?

दृष्टिपटल (Retina) आंखो की सबसे निचली परत होती है, जो कि प्रकाश के प्रति संवेदनशील होती है । मधुमेह रेटिना में खून की नसों को प्रभावित करता है । हमारी आंख एक कैमरे के जैसे होती है जिसमें लैंस किसी वस्तु के चित्र कों आंख के पर्दे (रेटिना) पर बनाता है । आँख का पर्दा रेटिना कैमरे की रील की तरह कार्य करता है । रेटिना पर खून की नसों में रक्त प्रवाह धीरे-धीरे कम होने लगता है । इसकी तीन अवस्थाएं होती है -

1) **प्रारंभिक अवस्था** (Back ground Diabetic Retinopathy) इस अवस्था में रक्त प्रवाह कम होने जाँच में प्रारंभिक लक्षण पाए जाते हैं । मरीज को इस अवस्था का पता नही चलता है । इस अवस्था में नजर पूरी तरह सामान्य रह सकती है कोई नेत्र विशेषज्ञ ही इस अवस्था का पता लगा सकता है

सामान्य रेटिना (पर्दे)

2) दृष्टिपटल पर सूजन (Macular Edema) इस अवस्था में इलाज हो जाने पर दृष्टि पूरी तरह बचाई जा सकती है । रक्त प्रवाह कम होने कारण दृष्टिपटल (रेटिना) मध्य में सूजन आने लगती है

3) **उग्र अवस्था** (Proliferalive Diabetic Retinopathy) यह अत्यंत गंभीर अवस्था है जिसमें खून की नई नसे बन जाती है जिनमें रक्त स्त्राव होकर नजर कम हो जाती है । यह नसें

डायबीटिज में रेटिना

दृष्टिपटल रेटिना पर खिचाव करके दृष्टिपटल को फाड़ सकती है (Tractional Retinal Detachment) ध्यान रहे कि डायबिटीक रेटिनोपैथी की बीमारी अपरिवर्तनीय (Non Reversalbe) है । एक बार दृष्टि कम होने दृष्टि वापस आना निश्चित नहीं है अतः अत्यंत सतर्क रहें । उपचार से केवल बीमारी को रोका जा सकता है ।

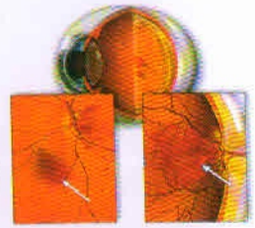
आंखो में रक्त स्त्राव

3. डायबिटीक में रेटिनोपैथी (दृष्टिपटल खराब) होने का खतरा किसे है ?

हर व्यक्ति जिसे डायबिटीस है उसे डायबिटीक रेटिनोपैथी का खतरा है

- कम उम्र से शुगर (डायबिटीक) होने पर 80% लोगों की यह बिमारी हो सकती है। अन्य खतरें
- बचपन से शुगर (डायबिटीस)
- ब्लड प्रेशर की बिमारी
- हृदय रोग
- रक्त की कमी
- अनियन्त्रित शुगर,
- किडनी (गुर्दे) की बिमारी
- गर्भावस्था
- उच्च रक्त वसा (Cholestrol)

ध्यान रहे डायबीटीज (शुगर) का अच्छा नियंत्रण होने पर भी डायबीटीक रेटिनोपैथी हो सकती है ।

4. डायबिटीक रेटिनोपैथी के बचाव के उपाय -

1) ब्लड शुगर में कंट्रोल ।
2) वचन कंट्रोल ।
3) दिन में प्रातः काल के समय नियमित आधा घंटा तेज चलना ।
4) ब्लड प्रेशर कंट्रोल
5) धुम्रपान न करें।
6) प्रणायाम (15 मिनट सुवह शाम)

5. मुझे कैसे पता चलेगा की मुझे डायबिटीक रेटिनोपैथी हो गया है ?

शुरुआत में नजर में कोई कमी नहीं आती । प्रारंभिक अवस्था में स्वयं को यह पता नहीं चल पाता कि आपको डायबिटीक रेटिनोपैथी है । जब तक आपको यह पता चलेगा तब तक यह बिमारी आपको 75 प्रतिशत तक प्रभावित कर चुकी हुई होगी । आपकी आंखों की नसें फटकर रेटिना में खून के धब्बे बना चुके होंगे । इसलिए जरूरी है कि यदि आपको डायबिटीज खून की कमी हाई ब्लडप्रेशर या किडनी से संबंधित कोई भी बिमारी है तो आप नेत्र चिकित्सक से परामर्श जल्द से जल्द लें । प्रारंभिक अवस्था में होने वालें उपचार से आप अपनी आंखों में होने वाली इस बिमारी से बच सकते हैं ।

6. मुझे अपनी आँखों की जांच कितने नियमित करवानी है ?

यदि आपको शुगर है तो आप प्रतिवर्ष अपनी आंखों के पर्दे की नेत्र चिकित्सक से जांच अवश्य कराए । जांच में चिकित्सक द्वारा आपकी आँखों में ड्रॉप डालकर आपकी पुतली को बड़ा किया जाता है जिससे चिकित्सक आपकी आँकों में रेटिना की अच्छी तरह से जांच कर सके । इसके पश्चात यदि आपकी आँखों में एक बार डायबिटीक रेटिनोपैथी के कुछ लक्षण मिल जाते है या गर्भावस्था किडनी रोग हो तो नेत्र चिकित्सक आपको अन्य दूसरे जांच दवाईयां एवं आवश्यकतानुसार पुनः जांच हेतू अपने को सलाह देते हैं ।

7. फ्लुरेसीन एन्जियोग्राफी क्या है ?

इस जांच में आपके हाथ में एक (Dye) रंग का इंजेक्शन लगाकर आँखों में दृष्टिपटल (रेटिना) के चित्र (Photograph) लिए जाते हैं । यह रंग रेटिना में पहुंचकर यह बताता है कि रेटिना में रक्त का प्रवाह कितना कम है ? इस जांच की सहायता से चिकित्सक को उपचार का भी निर्णय करने में भी सहायता मिलती है । डायबीटीक रेटिनोपैथी का इलाज उपचार के अंतर्राष्ट्रीय मापदण्डों को पालन करके ही किया जाता है ।

8. उपचार की विभिन्न विधियाँ क्या है ?

1) प्रारंभिक अवस्था को किसी उपचार की आवश्यकता नहीं है केवल डायबिटीस नियंत्रण पैदल चलना, प्रणायाम तथा नियमित जांच ही पर्याप्त है ।

2) **लेजर द्वारा उपचार** -
रेटिनें में सूजन/शुरूवाती रक्त के घब्बे आने पर लेजर किया जाता है ।

3) **रक्त की नसे रोधक इंजेक्शन क्या है ?** (Anti VEGF Agent Lucentis, AvastinKenacort) कुछ चुनिंदा मरीजों में लेजर के साथ ये इंजेक्शन उपचार में सहायक होते हैं । यह दर्द रहित इंजेक्शन होता है जिसे आंख के अंदर लगाया जाता है ।